शहीदी शताब्दी पुस्तक
प्रकाशना श्रृंखला-8

श्री गुरु तेग बहादर जी की अद्वितीय शहादत: ऐतिहासिक अध्ययन

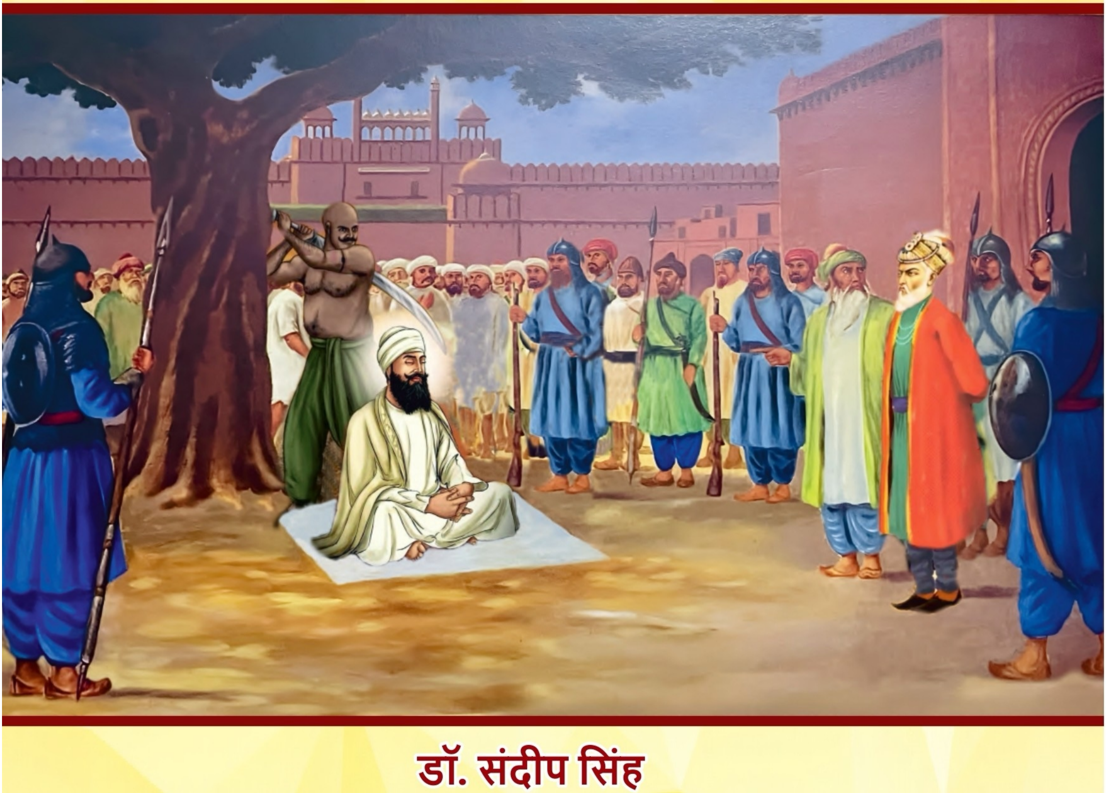

डॉ. संदीप सिंह

पब्लिकेशन एवं खोज विभाग,
हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी,
कुरुक्षेत्र

भेटा रहित

©
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

Sri Guru Teg Bahadur Ji Di Advitiy Shahadat: Etihasak Adhyayn
(Hindi)

Writer:
Dr. Sandeep Singh
In-charge
Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

Research Associate:
Bhai Gurdas Singh

Typing Work:
Satnam Singh

First Edition November 2025
4,000

Printer: Tejas Printers, Patiala

Published by Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

प्रवेशिका

श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत इतिहास का एक विलक्षण घटनाक्रम है, जिसे श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने 'कीनो बड़ो कलू महि साका' कहकर सम्मान प्रदान किया है। गुरु साहिब ने अपने दर पर आए मज़लूमों के धार्मिक अधिकारों की आज़ादी के लिए अपना शीश देकर इतिहास को एक नया मोड़ दिया। अपने निज से ऊपर उठकर दी गई यह शहादत, संसार की एक अद्वितीय शहादत है।

हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के 'पब्लिकेशन एवं खोज विभाग' द्वारा, श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर डॉ. संदीप सिंह द्वारा लिखित ट्रैक्ट के माध्यम से गुरु साहिब की शहादत के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करने का कार्य किया गया है। इस कार्य के माध्यम से जहां गुरु पातशाह के चरणों में अकादमिक श्रद्धांजलि भेंट की जा रही है, वहीं इस ट्रैक्ट के द्वारा संगत, गुरु जी की शहादत के विभिन्न पक्षों से भी परिचित होगी। हम हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी की तरफ से श्री गुरु तेग बहादुर जी की अनुपम शहादत को कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं।

जथेदार जगदीश सिंह झींडा

प्रधान

हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी

कुरुक्षेत्र।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रारम्भ किए गए 'खन्निअहु तिखी वालहु निकी' वाले सिक्खी मार्ग के नौवें गुरु, श्री गुरु तेग बहादर जी, धर्म रक्षक मसीहा के रूप में जाने जाते हैं, जिनका नाम धार्मिक स्वतंत्रता और मानवीय अधिकारों के लिए दी गई शहादत के कारण अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने उस समय की, अत्याचार और नरक भोग रही जनता को 'भै काहू कौ देत नहि नहि भै मानत आन' का निडरता वाला पाठ पढ़ाया जिसने लोगों में एक नई चेतना जागृत की। गुरु साहिब ने समय की जरूरत के अनुसार अत्याचारों के खिलाफ लड़े जा रहे सशस्त्र युद्ध में तेग के जौहर भी दिखाए और समय आने पर शांतिपूर्ण ढंग से 'ठीकरि फोरि दिलीस सिरि' वाली शहादत के माध्यम से 'कीनो बडो कलू महि साका' वाले इतिहास की रचना भी की। त्याग और वैराग्य के गुणों के धारक गुरु साहिब ने करतारपुर के युद्ध में बहादुरी दिखाते हुए 'तेग बहादर' का सम्मान प्राप्त किया और 'दीन कै हेत' लड़ने वाले योद्धे का साकार रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी 'भै काहू कौ देत नहि नहि भै मानत आन' के सिद्धांत पर दृढ़ता के साथ पहरा देते हुए अत्याचारों के खिलाफ आवाज बुलंद की; अपने दर पर फरियादी हो कर आए मज़लूमों का साथ दिया, भले ही इसके लिए उन्हें अपनी शहादत देनी पड़ी, लेकिन मज़लूमों को खाली हाथ नहीं लौटाया। गुरु तेग बहादर जी उच्च आध्यात्मिक-दार्शनिक व्यक्तित्व के मालिक थे, जिसको हम उनके जीवन की घटनाओं और उनकी बाणी के माध्यम से भली-भांति महसूस कर सकते हैं।

इस पुस्तिका का उद्देश्य श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत से संबंधित ऐतिहासिक पहलुओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना है।

'शहादत' शब्द अरबी भाषा के 'शहीद' शब्द से बना है। यदि हम 'शहीद' शब्द के अर्थ की बात करें, तो पंजाबी **विश्वकोश**[1] के अनुसार शहीद वह **व्यक्ति** है जो सच्चाई और नेकी के मार्ग पर चलते हुए अपनी जान कुर्बान कर देता है। शहीद होने वाला महान व्यक्ति असीम शक्ति का ऐसा स्रोत होता है जो अपनी जान देकर कौम में नई रूह स्थापित कर देता है। भले ही शहीद शब्द मूल रूप से अरबी भाषा का शब्द है, लेकिन सिक्ख धर्म ने इस शब्द को इतने वास्तविक और गहन रूप में अपनाया है कि कि इस शब्द का मूल सिक्ख धर्म में ही प्रतीत होता है । यद्यपि सिक्ख धर्म के अलावा विश्व के विभिन्न धर्मों में भी शहादत का संकल्प प्राप्त होता है, लेकिन धर्मों में शहादत के तुलनात्मक अध्ययन के बाद सिक्ख धर्म में मौजूद शहादत का प्रसंग अपने आप में विलक्षण और उच्चता के रूप में स्थापित हो जाता है। सिक्ख धर्म में शहादत का संकल्प एक विशेष स्थान रखता है, जिसे 'मरनु मुनसा सूरिया हकु है जे होइ मरनि परवाणो' कहकर महिमामंडित किया गया है । सिक्ख धर्म में शहादत, बिना किसी लालच या विवशता के, किसी नेक उद्देश्य या उच्च सिद्धांत के लिए अपने निज से ऊपर उठकर दी गई जीवन की कुर्बानी है । सिक्ख धर्म, सामी **(पश्चिमी)** धर्मों की तरह अपने धर्म या अपने निज के लिए शहादत देने की प्रेरणा नहीं देता, बल्कि यह दूसरों के हितों के लिए भी शहादत देने वाला धर्म है । श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । इस अनुपम शहादत के लिए उन्हें सम्मानपूर्वक 'हिंद की चादर' भी कहा जाता है, क्योंकि श्री गुरु तेग बहादर जी ने उस समय हिंदू धर्म पर हो रहे धार्मिक अन्याय और अत्याचार के

---

[1] पंजाबी विश्वकोश, जिल्द तीसरी, पृष्ठ 347 भाषा विभाग, पंजाब 2010.

खिलाफ अपनी शहादत देकर हिंदू धर्म की रक्षा की। इस पहलू के संबंध में यह विचारणीय है कि क्या गुरु साहिब केवल हिंदू धर्म की चादर हैं ? क्या उनका सिद्धांत किसी विशेष धर्म की रक्षा करने का है ? ऐसा प्रतीत होता है कि 'हिंद दी चादर' कहकर हम उनकी शख्सियत और शहादत को छोटा कर देते हैं। यदि यह अत्याचार मुसलमानों पर या अन्य धर्म पर होता, तब भी वे शहादत से पीछे नहीं हटते। इसलिए गुरु साहिब किसी विशेष धर्म के रक्षक या केवल 'हिंद दी चादर' नहीं, बल्कि 'सम्पूर्ण सृष्टि की चादर' हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवि सैनापति ने श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत को विश्वव्यापी रुतबा प्रदान करते हुए उन्हें समस्त सृष्टि की चादर कहकर सम्मान दिया है-

प्रगट भए गुरु तेग बहादर। सगल सृष्टि पै ढापी चादर।[2]

वास्तविक अर्थों में, कवि सैनापति की तरह गुरु साहिब को किसी विशेष धर्म या विचार तक सीमित करने के बजाय 'सृष्टि की चादर' कहना ही उनकी शहादत का असली सम्मान है।

गुरु साहिब की शहादत को समझने के लिए उनकी शहादत के लिए जिम्मेदार कारणों, उनकी गिरफ्तारी, औरंगजेब की उनकी शहादत के समय दिल्ली में उपस्थिति या अनुपस्थिति, शहादत के बाद की घटनाओं, शहादत के प्रभाव आदि ऐतिहासिक पहलुओं को समझना बहुत जरूरी है, क्योंकि इन पहलुओं के संबंध में हमारी परंपरा में विभिन्न धारणाएं प्रचलित हैं और हमारे विद्वान इतिहासकार इस संबंध में अलग-अलग विचार व्यक्त करते हैं। इस

---

[2] सैनापति, *श्री गुरु सोभा*, गंडा सिंह (संपादक), पृष्ठ 64, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2017.

पुस्तिका में उनकी शहादत से संबंधित इन पहलुओं को भट्ट वहियों, **विश्वसनीय** सिक्ख स्रोत ग्रंथों और सिक्ख विद्वानों के तथ्यों के आधार पर सिक्ख सिद्धांतों की रोशनी में विचारने की कोशिश की जाएगी।

गुरु साहिब जी की शहादत का मुख्य कारण औरंगजेब का दार-उल-इस्लाम का सपना था, जिसके तहत बह पुरे हिन्दुस्तान को मुसलमान बनाना चाहता था इस उदेश्य की पूर्ति के लिए उसने गैर-मुसलमानों पर अनेक कठोर आदेश[3] लागू किए ताकि वे इस्लाम स्वीकार कर लें। मआसिरि-ए-आलमगीरी के अनुसार[4] औरंगज़ेब ने सूबों के नाज़िमों को आदेश दिया कि वे काफिरों के स्कूल और मंदिरों को नष्ट कर दें तथा उनकी शैक्षणिक और धार्मिक गतिविधियाँ बंद कर दें। इस आदेश के अंतर्गत गुजरात का सोमनाथ मंदिर, बनारस का काशी **विश्वनाथ** मंदिर और मथुरा का केशव राय मंदिर नष्ट कर दिए गए।[5] मंदिरों से उखाड़कर लाई गई मूर्तियों के टुकड़े आगरा की मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे दबा दिए गए, ताकि मस्जिद में आने-जाने वाले मुसलमान उन धार्मिक मूर्तियों को रौंदकर उनकी बेअदबी कर सकें।[6] हिंदू धर्म की पवित्र नगरी मथुरा का नाम बदलकर इस्लामाबाद

---

[3] विस्तृत विवरण के लिए देखें- प्रिं. सतिबीर सिंह, *इति जिनि करी*, पृष्ठ 147-151, न्यू बुक कंपनी जलंधर, 1975.

[4] *MAÂSIR-I-ÂLAMGIRI,* Sir Jadunath Sarkar (Pranslater), Royal Asiatic Society of Bengal, 1947 AD, P.51-52.

[5] Ishwari Prasad, *A Short History of Muslim Rule in India,* The Indian Press Limited, Allahabad, 1931 AD, P. 687

[6] Stanley Lane-Poole, *Rulers of India: Aurangzib*, Printed at the Clarendon Press, Oxford University, 1893 AD, P. 136

रख दिया गया ।[7] अकबर द्वारा 1564 ई. में बंद किया गया जज़िया कर, औरंगज़ेब ने 1679 ई. में फिर से लागू कर दिया[8] और हिंदुओं को जबरन इस्लाम धर्म में लाने की कोशिश की। 'हिस्ट्री ऑफ दी सिख्स' के लेखक मुहम्मद लतीफ के अनुसार[9] उसने सैकड़ों ब्राह्मणों को इसलिए जेल में डाल दिया कि यदि वे इस्लाम धर्म अपना लेंगे, तो बाकी हिंदू अपने आप मुसलमान बन जाएंगे। औरंगजेब ने अपनी इस कट्टर नीति के तहत कश्मीर के गवर्नर इफ्तिखार खान[10] को 1671 ई. में कश्मीर का गवर्नर बनाया, जिसने कश्मीरी पंडितों को इस्लाम में लाने या कत्ल करने का आदेश जारी किया।

इस संबंध में कश्मीरी पंडितों का एक प्रतिनिधिमंडल पंडित कृपा राम[11] की अगुवाई में ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष 11, संवत् 1732 (25 मई, 1675 ई.) को श्री गुरु तेग बहादर जी से चक्क नानकी (आनंदपुर साहिब) में

---

[7] Ishwari Parshad, *A Short History of Muslim Rule in India,* P.687.

[8] En.m, Wikipedia.org/wiki/jizya

[9] मुहम्मद लतीफ, हिस्ट्री ऑफ दी सिख्स, उद्धृत गुरु तेग बहादर: जीवन, संदेश और शहादत, तारन सिंह (संपादक), पृष्ठ 237, पब्लिकेशन ब्यूरो, यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1997.

[10] भाई संतोख सिंह ने इसका नाम शेर अफगान खां लिखा है (रास 12, अंसू 27) जो कि इतिहासकारों के अनुसार औरंगजेब द्वारा दी गई उपाधि का नाम है।

[11] कृपाराम बाद में गुरु गोबिंद सिंह जी का अध्यापक भी रहा और प्रमुख सिक्खों में शामिल होकर महत्वपूर्ण योगदान दिया। यही कृपाराम अमृतपान करके कृपा सिंह बना और चमकौर के युद्ध में शहादत प्राप्त की। (गुरु तेग बहादर: जीवन, संदेश और शहादत, तारन सिंह (संपादक), पृष्ठ 201, प्यारा सिंह पदम के लेख से)

सहायता के लिए मिला। इस संबंधी विवरण गुरु की साखियों[12] और 'भट्ट वही मुलतानी सिंधी, खाता बलउतों' का से इस प्रकार मिलता है:-

कृपा राम बेटा अड़ू राम का पोता नरैण दास का पड़पोता ब्रह्म दास का बंस ठाकुर दास की दत्त गोत्रा मुझाल ब्राह्मण बासी मट्टन देश कश्मीर संबत सतरां सौ बत्तीस जेठ मासे सुदी एकादसी के दिहु खोड़स मुखी कश्मीरी ब्राह्मणों को गैल लै ग्राम चक्क नानकी परगना कहिलूर गुरु तेग बहादुर जी महल नामा के दरबार आइ फरियादी हुआ। गुरु जी ने इसे धीरज दई, बचन हुआ तुसां दी रक्षा बाबा नानक जी करेगा।[13]

गुरु तेग बहादर जी की शहादत के कारण के संबंध में गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपनी रचना बचित्र नाटक में 'धरम हेत साका जिनि कीआ' लिखकर यह स्पष्ट कर दिया है कि श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत धर्म की रक्षा के लिए हुई थी भी, न कि किसी राजनीतिक कारण से। उपरोक्त गवाहियों में गुरु जी की शहादत का कारण स्पष्ट होने के बावजूद, माने-प्रमाने सिक्ख इतिहासकार डॉ. फौजा सिंह ने गुलाम हुसैन की रचना 'सीयर-उल-मुताखिरीन'[14] जैसी **अविश्वसनीय** रचना को आधार बनाकर यह साबित

---

[12] गुरु कीयां साखीयां, प्यारा सिंह पदम (संपादक), पृष्ठ 78-79, सिंह ब्रदर्स, अमृतसर, 2008.

[13] भट्ट वही मुलतानी सिंधी, खाता बलउतों का, उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 85-86.

[14] फारसी भाषा की इस रचना को सन् 1786 ई. में प्रकाशित किया गया, जिसका अंग्रेजी अनुवाद मद्रास सेना के लेफ्टिनेंट कर्नल JOHN BRIGGS द्वारा 1831 ई. में किया गया। इस अनुवाद का प्रकाशन ORIENTEL TRANSLATION FUND OF

करने की असफल कोशिश की कि श्री गुरु तेग बहादर जी को औरंगजेब के राज्य में राजनीतिक गड़बड़ी पैदा करने की राजनीतिक सजा दी गई थी। इस बात का आधार डॉ. फौजा सिंह ने मीर गुलाम हुसैन खान की लिखत 'सीयर-उल-मुताखिरीन' के अंग्रेजी अनुवाद को बनाया, जिसका कुछ हिस्सा इस प्रकार है:

"The Ninth in Succession from Angad was one Teg Bahadur, who drew multitude after him, all of whom, as well as their leader, used to go armed. Finding himself at the head of so many thousand people, he aspired to Sovereignty and united himself to one Adam Hafiz, a Mussulman dervish of the Fraternity of Shah Ahmed Serhindy. These two Person no sooner saw themselves at the head of many followers they began to plunder and to lay waste the whole Province of Penjab; For Whilst Teg Bhadur levied contributions on Hindus, Hafiz Adam did the same upon the Mussulmans……Some time after this, Teg Bahadur suffered death; and his body being cut into four quarters, was expored at the four gates of the fortress of Gwaliar."[15]

GREAT BRITAIN AND IRELAND, LONDON द्वारा किया गया।

[15] MIR GHOLAM HUSSAIN KHAN, *SIYAR-UL-MUTAKHREEN*,

इस अनुवाद को पढ़कर पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि इसमें श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा आदम हाफिज[16] के साथ मिलकर लोगों से जबरन धन इकट्ठा करने, बहन-बेटियों की बेइज्जती करने और गुरु जी की शहादत के बाद उनके शरीर के चार हिस्से करके ग्वालियर के किले के चार दरवाजों पर लटकाने वाली बात, ऐतिहासिक प्रामाणिकता के आस-पास भी नहीं है। फिर भी डॉ. फौजा सिंह ने इस लिखत को महत्वपूर्ण ऐतिहासिकता प्रदान करते हुए 'Execution of Guru Teg Bhadur-A New Look'[17] के शीर्षक के तहत एक लेख प्रकाशित करवाया, जिसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे मुग़ल हुकूमत की ओर से गुरु साहिब की शहादत के बारे में व्हाइट पेपर लिख रहे हों। इस लेख को पढ़कर यह विचार सामने आता है कि डॉ. फौजा सिंह के अनुसार गुरु जी की शहादत का कोई धार्मिक कारण नहीं था, बल्कि वे मुग़ल हुकूमत के राजनीतिक दोषी थे, जिन्हें उस समय के कानून के अनुसार मृत्यु की सजा दी गई। इस लेख के संबंध में एक और बात उभरकर सामने आती है कि यह लेख, डॉ. फौजा सिंह की अपनी पिछली लिखतों के विचारों के कई पहलुओं से पूरी तरह विपरीत था। उदाहरण के लिए, उन्होंने

Collacted and Revised by JOHN BRIGGS, 1831 AD, P. 112-113

[16] डॉ. गंडा सिंह के अनुसार हाफिज आदम की मृत्यु, गुरु जी के गुरु पद पर बैठने से 21 साल पहले (दिसंबर 1643 ई.) में हो चुकी थी, जिसे शाहजहां ने देश निकाला देकर मक्का भेज दिया था, न कि औरंगजेब ने। इसलिए गुरु तेग बहादर जी द्वारा उनके साथ मिलकर जबरन धन इकट्ठा करने की बात पूरी तरह निराधार है। (गुरु तेग बहादर स्मृति अंक, 1975, पृष्ठ 40)

[17] *JOURNAL OF SIKH STUDIES,* Vol.I, no. 1, February 1974, P. 79-89.

अपनी लिखतों में औरंगजेब को हिंदू धर्म का विरोधी[18], कश्मीरी पंडितों का श्री गुरु तेग बहादर जी के पास फरियाद लेकर आना[19], धर्म के अधिकारों की आजादी के लिए गुरु साहिब की शहादत होना[20] आदि तथ्यों को संदर्भ सहित प्रमाणित किया है, लेकिन उनके इस लेख में औरंगजेब हिंदू धर्म का विरोधी नहीं रहा[21], कश्मीरी पंडितों वाली घटना पर किंतु-परंतु[22] और गुरु साहिब की शहादत का सियासी सजा में बदल जाना[23] उनके इस लेख के बारे में दुविधा पैदा करते हैं। इसी प्रकार के विचारों की पुष्टि करने वाला एक और लेख 'The Martyrdom of Guru Tegh Bhadur'[24] के शीर्षक के तहत भी डॉ. फौजा सिंह द्वारा छपवाया गया। इस तरह की गैर-सिद्धांतिक और गैर-ऐतिहासिक बातें गुरु साहिब की शहादत के साथ-साथ उनकी आध्यात्मिक सख्शियत पर भी सीधा हमला थीं, जिसका उस समय की सिक्ख अकादमिकता द्वारा तीखा विरोध हुआ। प्रोफेसर ऑफ सिखिज्म सिरदार कपूर सिंह ने इन बातों का जवाब अपने लेखों *'गुरु तेग बहादर*

---

[18] फौजा सिंह और तारन सिंह, *श्री गुरु तेग बहादर: जीवन और रचना*, पृष्ठ 58-66, 78, 95-98.

[19] वही, पृष्ठ 78.

[20] वही, पृष्ठ 95-98.

[21] *JOURNAL OF SIKH STUDIES,* Vol.I, no. 1, February 1974, P. 81.

[22] वही।

[23] वही, P. 87-89.

[24] *THE PUNJAB PAST AND PRESENT*, VOL. IX-I, April 1975, P. 137-157

साहिब दी शहीदी अते नवीन सिखां दी कुचेष्टा'[25] और 'Who Killed Guru Teg Bhadur?[26] आदि लेखों में बड़े तर्कपूर्ण ढंग और सख्त शब्दों में दिया। उन्होंने पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के सीनेट हॉल में सोध पेपर के माध्यम से[27] डॉ. फौजा सिंह की दलीलों को खारिज किया और डॉ. गंडा सिंह के **प्रश्नों** का जवाब देकर उन्हें संतुष्ट किया।[28] सिक्ख **विश्वास** और सिक्ख सिद्धांतों पर किंतु करने वाले इस प्रकार के विचारों के संबंध में डॉ. फौजा सिंह को आखिरकार अकाल तख्त साहिब से माफी मांगकर सिक्ख पंथ के गुस्से को शांत करना पड़ा।[29]

डॉ. फौजा सिंह द्वारा अपनी लिखतों का आधार बनाने वाली लिखत 'सीयर-उल-मुताखिरीन' के इस अनुवाद को इतिहासकार डॉ. गंडा सिंह, ऐतिहासिक भूल और स्थिति को बिगाड़ने वाला कहते हुए लिखते हैं: "These Translations run quite wide of the mark and have come to do great injustice to the subject they deal. This is Particularly the case with the account of Sikhs where the author's anachronism has also conspired with the translation to worse the situation."[30]

---

[25] मानसरोवर (साप्ताहिक), 7-14 दिसंबर 1975, पृष्ठ 32-34.

[26] *THE SIKH REVIEW,* January 1976, P. 104 (i)- 104 (xii).

[27] सिरदार कपूर सिंह द्वारा यह पेपर 5 जनवरी 1976 को पढ़ा गया।

[28] हरपाल सिंह पन्नू, सवेर तों शाम तक, पृष्ठ 137.

[29] हरपाल सिंह पन्नू, सवेर तों शाम तक, पृष्ठ 137.

[30] नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 95.

उन्होंने इस बात को भी प्रमाणित[31] किया कि इसका फारसी से अंग्रेजी अनुवाद करने के दौरान कई गलतियां हुईं, जिन्हें ठीक करके उन्होंने सही अनुवाद पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। श्री गुरु तेग बहादर जी के बारे में लिखे गए गुलाम हुसैन के ऐसे विचारों के बारे में मैकॉलिफ लिखता है: "मुसलमान लेखक द्वारा बयान किए गए समाचार गुरु जी के जीवन और उनकी बाणी के साथ बिल्कुल मेल नहीं खाते और इन्हें इतिहास समझकर प्रमाणिक नहीं माना जा सकता।"[32] 'सीयर-उल-मुताखिरीन' नामक इस लिखत के अलावा डॉ. फौजा सिंह द्वारा 'मुआसिरी आलमगिरी' नामक लिखत के माध्यम से सिक्ख स्रोत ग्रंथों को अनदेखा करके शहादत के समय औरंगजेब की दिल्ली में अनुपस्थिति भी दर्शाई गई, जिसके संबंध में विचार पुस्तिका में आगे चल कर किया जाएगा।

इसके बाद अगला पहलू श्री गुरु तेग बहादर जी की गिरफ्तारी के स्थान से संबंधित है कि शहीदी से पहले उनकी गिरफ्तारी किस स्थान से हुई। यदि हम ऐतिहासिक स्रोतों में उनकी गिरफ्तारी खोजने का प्रयास करते हैं, तो तीन गिरफ्तारियां सामने आती हैं। भट्ट वही जादोबंसी[33] और गुरु कीयां साखीयां[34] के अनुसार गुरु साहिब की पहली गिरफ्तारी कार्तिक मास

---

[31] वही।

[32] Macauliffe, Max Arthur, *The Sikh Religion: Its Gurus, sacred Writings and Authors*, Vol.iv, P.332 उद्धृत इंदुभूषण बनर्जी, खालसे दी उत्पति, भाग दूसरा, पृष्ठ 62.

[33] *भट्ट वही जादोबंसीयां, खाता कनावत बड़तियों का,* उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 83-84.

[34] *गुरु कीयां साखीयां,* प्यारा सिंह पदम (संपादक), पृष्ठ 73-74,

शुक्ल पक्ष 11, संवत् 1722 बिक्रमी (1665 ई.) को धमतान साहिब (वर्तमान समय में हरियाणा प्रांत के जींद जिले का हिस्सा) नाम के स्थान से हुई। इस गिरफ्तारी के अतिरिक्त गुरु साहिब की दो और गिरफ्तारियों का विवरण प्राप्त होता है, जिनका संबंध गुरु साहिब की शहादत से पहले वाली गिरफ्तारी से जोड़ा जाता है। भाई संतोख सिंह[35] और ज्ञानी ज्ञान सिंह[36] के अनुसार, गुरु साहिब जी को शहादत से पहले आगरा से गिरफ्तार किया गया, जहाँ गुरु साहिब जी ने अपने आप को अनोखे ढंग[37] से प्रगट किया। दूसरे विचार के अनुसार गुरू साहिब जी को को रोपड़ के नजदीक मलकपुर रंघड़ां नामक स्थान से गिरफ्तार किया गया और बस्सी पठानां में कैद करके रखने के बाद दिल्ली भेजा गया। भट्ट वही तलौंडा के अनुसार[38] श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 12, संवत् 1732 विक्रमी (12 जुलाई, 1675 ई.), अर्थात शहीदी के लिए आनंदपुर साहिब से दिल्ली रवाना होने के अगले दिन, गुरु साहिब जी और उनके साथ तीन सिक्खों को रोपड़ के पास मलकपुर रंघड़ां नामक गाँव से मिर्ज़ा नूर मुहम्मद ख़ान द्वारा गिरफ्तार किया गया। इसके बाद उन्हें चार

---

[35] श्री गुर प्रताप ग्रंथ, जिलद ग्यारहवीं, राशि 12, अंशू 37, पृष्ठ 4369-4372

[36] तवारीख गुरु खालसा (डिजीटल प्रकाशन), प्रकाशक भाई बलजिंदर सिंह (राडा साहिब), पृष्ठ 59-60

[37] सिक्ख स्रोतों के अनुसार गुरु जी ने आगरा के एक बाग से हसन अली नामक मुस्लिम चरवाहे को मिठाई खरीदने के लिए एक कीमती दुशाला और कीमती अंगूठी दी। इसके द्वारा मुग़ल फौजों को बाग में अपनी उपस्थिति का अहसास करवा कर उन्होंने गिरफ्तारी दी।

[38] *भट्ट वही तलौंडा,* परगना जींद, उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 86.

महीने बस्सी पठानां और आठ दिन दिल्ली में कैद रखा गया। इसका विवरण भट्ट वही मुल्तानी सिंधी में इस प्रकार प्राप्त होता है:

"गुरु तेग बहादुर जी महल नामा... को नूर मुहम्मद खां मिर्जा चऊकी रोपड़ वाले ने साल सतरां सौ बत्तीस, सावन परविशटे बारां के दिहु गाउं मलकपुर रंघड़ा परगना घनौला से पकड़ के सरहंद पुंचाया। गैलो दीवान मती दास, सती दास बेटा हीरा मल्ल छिब्बर के, गैल दियाल दास बेटा माई दास बलऊंड पकड़िया आया। गुरु जी चार मास बस्सी पठानां के बंदीखाने बंद रहे, आठ दिवस दिल्ली कोतवाली में बंद राखे।" [39]

गुरु कीयां साखीयां[40] और केसर सिंह छिब्बर रचित बंसावलीनामा दसां पातशाहियां का[41] में भी इस गिरफ्तारी का वर्णन मिलता है। इन्हीं के आधार पर कुछ इतिहासकार मानते हैं कि यह गिरफ्तारी श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत से पहले वाली गिरफ्तारी थी और इस गिरफ्तारी के बाद गुरु साहिब जी को बस्सी पठानां से दिल्ली ले जाकर शहीद किया गया परंतु यह विवरण सिक्ख परंपरा और सिक्ख स्त्रोत ग्रंथों से नहीं मिलते अर्थात यह विवरण सिक्ख परंपरा और सिक्ख स्त्रोत ग्रंथों से अलग है। सिक्ख परंपरा के अनुसार, शहादत से पहले श्री गुरु तेग बहादर जी के, पंजाब और हरियाणा के कई स्थानों पर चरण डालने के प्रमाण मिलते हैं। सिक्ख परंपरा

---

[39] भट्ट वही मुल्तानी सिंधी, खाता बलौतों का, उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 86 भट्ट वही मुल्तानी सिंधी, खाता बलौतों का, उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 86.

[40] गुरु कीयां साखीयां, पृष्ठ 80-81

[41] बंसावलीनामा दसां पातशाहीयां का, रत्न सिंह जग्गी, डॉ. (संपा.), पृष्ठ 116

में गुरु जी की शहादत से पहले आगरा से गिरफ्तारी संबंधी भी एक मजबूत परंपरा मौजूद है और उस स्थल पर गुरुद्वारा भी स्थापित है।

अब यह **प्रश्न** पैदा होता है की गुरु साहिब की गिरफ़्तारी मलकपुर रंघड़ां से हुई या आगरा से ? इसलिए सिक्ख स्रोत ग्रंथों पर आधारित आगरा की गिरफ्तारी वाले विचार को भी नकारा नहीं जा सकता और न ही भट्ट वही के तथ्यों को अनदेखा किया जा सकता है। इन दोनों विचारों के आधार पर यदि हम यह मान लें कि धमतान साहिब (1665 ई.) की पहली गिरफ्तारी के अलावा गुरु साहिब जी की दो और गिरफ्तारियाँ हुईं, तो यह गलत नहीं होगा। बस इनके समय और घटनाक्रम को समझने की आवश्यकता है।

मलकपुर रंघड़ां की गिरफ्तारी को प्रिं. सतिबीर सिंह ने[42] मुग़ल हुकूमत द्वारा दी गई चेतावनी माना है, जिसके बाद गुरु साहिब जी को रिहा कर दिया गया। यह विचार काफी हद तक ठीक भी प्रतीत होता है, क्योंकि भट्ट वहियों में गुरु जी की मलकपुर रंघड़ां वाली गिरफ्तारी के बाद शहीद होने का कोई विवरण नहीं है, जबकि आगरा की गिरफ्तारी के बाद सिक्ख स्रोत ग्रंथों में शहादत के बारे में विस्तार से मिलता है। यह भी संभव है कि संचार साधनों की कमी के कारण भट्ट वहियों के लेखक को मलकपुर रंघड़ां वाली गिरफ्तारी के बाद गुरु जी की रिहाई का पता न लगा हो। सिक्ख स्रोत ग्रंथों में रोपड़ वाली गिरफ्तारी के ज़िक्र की अनुपस्थिति का भी यही कारण हो सकता है।

भट्ट वहियों में जो गुरु साहिब जी की 4 महीने कैद का जो विवरण **प्राप्त** होता है, हो सकता है कि वह लागू होने की जगह केवल लिखित रूप

---

[42] प्रिं. सतिबीर सिंह, इति जिनि करी, पृष्ठ 171-172.

तक ही सीमित रह गया हो, बिल्कुल उसी तरह जैसे जहांगीर द्वारा गुरु अर्जन देव जी के घर, जायदाद और परिवार को मुरतज़ा खान के हवाले करने का हुक्म[43] लिखित में तो आ गया, लेकिन लागू नहीं हुआ।

खैर, मलकपुर रंघड़ां गिरफ्तारी के बाद गुरु साहिब की रिहाई को स्वीकार करने से मलकपुर रंघड़ां या आगरा वाली असमंजस लगभग खत्म हो जाती है, क्योंकि गुरु साहिब के शहादत से पहले, कुछ महीने नवाब सैफ खान के पास ठहरने का समय लगभग सभी सिक्ख स्रोत[44] स्वीकार करते हैं। मलकपुर रंघड़ां वाली यह गिरफ़्तारी गुरु जी की दूसरी गिरफ़्तारी थी। इस विचार के संबंध में अंतिम निर्णय विद्वान पाठकों और लेखकों ने ही करना है।

नवाब सैफ़ ख़ान से विदा होकर गुरु साहिब जी पटियाला, समाना, करहाली, चीका, करा, पेहोवा, रहेले, लाखन माजरा, रोहतक, कनौड़ आदि स्थानों से होते हुए आगरा पहुँचे[45], जहाँ उन्हें गिरफ्तारी के बाद दिल्ली ले जाया गया। आगरा वाली यह गिरफ्तारी गुरु साहिब जी की तीसरी गिरफ्तारी थी, जो शहादत से पहले हुई। गुरु साहिब जी के साथ भाई मती दास, भाई सती दास और भाई दयाला जी को भी गिरफ्तार किया गया जिनको बाद में शाही आदेश अनुसार इस्लाम धर्म कबूल ना करने के कारण, चांदनी चौक,

---

[43] तुज़कि जहांगीरी, उद्धृत *सिक्ख इतिहास बारे* कृत डॉ. गंडा सिंह, पृष्ठ 10-11.

[44] (क) बसे चुमासा सतिगुरु डेरा कीनि मुकाम। सैफदीन सेवा करहि नित प्रति आय सलाम। (*श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ,* रास 12, अंसू 31, पृष्ठ 4337)

(ख) तवारीख गुरु खालसा के अनुसार गुरु साहिब 17 अस्सू, 1732 बिक्रमी (1675 ई.) तक नवाब सैफदीन के पास ठहरे।

[45] *तवारीख गुरु खालसा* (डिजिटल प्रकाशन), पृष्ठ 53-59.

दिल्ली में गुरु जी की आँखों के सामने शहीद कर दिया गया ताकि गुरु जी में भय उत्पन्न हो सके।

भाई मती दास जी के शरीर को मध्य से आरे के साथ चीर कर दो टुकड़े करके, भाई सती दास जी को रुई में लपेटने के बाद आग लगा कर और भाई दयाला जी को देग (एक बड़े बर्तन) के अंदर उबलते हुए पानी के बर्तन में बैठा कर शहीद किया गया।

यहां आकर एक अंतिम प्रश्न सामने आता है कि श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के समय औरंगजेब दिल्ली में था या हसन अब्दाल में। जादू नाथ सरकार (1947 ई.) से पहले यह बात निर्विवाद थी कि शहादत के समय औरंगजेब दिल्ली में ही था, क्योंकि सिक्ख स्रोत ग्रंथ गुरु जी की शहादत से पहले औरंगजेब और गुरु साहिब के बीच होने वाली बातचीत का विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। औरंगजेब के दिल्ली में न होने की बात उस समय प्रचलित हुई जब जादू नाथ सरकार ने 'मआसिरी आलमगिरी' नामक पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद[46] करके अपने अनुवाद में यह लिखा कि 14 फरवरी, 1674 ई. को अफगानों के हाथों मुगल सेनापति सुजायत खान के मारे जाने की खबर मिलने के बाद औरंगजेब 7 अप्रैल, 1674 ई. को हसन अब्दाल की ओर चला गया और 23 दिसंबर 1675 ई. तक विद्रोह दबाने के लिए वहां रहा।[47] इसे आधार बनाकर डॉ. फौजा सिंह[48] और डॉ. गंडा सिंह[49]

---

[46] साकी मुस्ताद खां द्वारा फारसी भाषा में लिखी इस पुस्तक को 1947 ई. में जदुनाथ सरकार ने अंग्रेजी में अनुवादित किया। इस पुस्तक का 1977 ई. में पंजाबी अनुवाद भी पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला द्वारा प्रकाशित किया गया।

[47] *MAÂSIR-I-ÂLAMGIRI,* SIR JADUNATH SARKAR (Translater),

जैसे नामी सिक्ख इतिहासकारों ने अपनी लिखतों में इस बात को उभारा कि श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के समय औरंगजेब हसन अब्दाल में था, जिसे बाद के कई सिक्ख लेखकों ने बिना किसी विचार के स्वीकार कर लिया । जहां तक 'मआसिरी आलमगिरी' के ऐतिहासिक महत्व का **प्रश्न** है, इसकी ऐतिहासिक महत्ता की कमी के बारे में जादू नाथ सरकार अपनी पुस्तक 'HISTORY OF AURANGZIB' में लिखते हैं: *"Unfortunately, this work is very condensed and lacks the fullness and detail of the regular official annals."*[50] क्या ऐसी जटिल और ऐतिहासिक कमी वाली लिखत को हमारे इतिहास के लिए बिना किसी पड़ताल के स्वीकार किया जा सकता है ?

औरंगजेब की हसन अब्दाल वाली बात को खारिज करते हुए डॉ. सुखदयाल सिंह लिखते हैं: *"हसन अब्दाल कौन सी इतनी बड़ी मुहिम थी कि बादशाह को खुद फौज का नेतृत्व करना पड़ा और डेढ़ साल (1½) तक वहां रहना पड़ा। यह एक साधारण मुहिम थी। यह भी हो सकता है कि फौज को हौंसला देने या दुश्मन को निराश करने के लिए यह बात फैलाई गई हो कि बादशाह खुद फौज का नेतृत्व कर रहा है । ऐसी बातों की रोशनी में 'मआसिरी आलमगिरी' के लेखक को बादशाह की वास्तविक उपस्थिति का भ्रम हो सकता है या यह जानबूझकर भी लिखा जा सकता है ।"* [51]

1947 AD, P. 81-82, 91.

[48] फौजा सिंह और तारन सिंह, *श्री गुरु तेग बहादर: जीवन और रचना*, पृष्ठ 88.

[49] *नानक प्रकाश पत्रिका*, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 98.

[50] *History of AURANGZIB,* 1912 AD, P XVI.

[51] सुखदयाल सिंह (डॉ.), *पंजाब दा इतिहास*, जिल्द पांचवीं, पृष्ठ 169.

इस संबंध में सिरदार कपूर सिंह लिखते हैं कि मुस्लिम लेखकों द्वारा औरंगजेब की दिल्ली में अनुपस्थिति राजनीतिक सत्य तो हो सकता है, लेकिन ऐतिहासिक सत्य नहीं।[52] उन्होंने अपने लेख *'Who ordered the execution of Guru Tegh Bhadur'*[53] में तर्कपूर्ण ढंग से यह प्रमाणित किया कि जदूनाथ सरकार द्वारा हिजरी सन् को ईसवी सन् में सही ढंग से परिवर्तित नहीं किया गया। यदि हम औरंगजेब का हसन अब्दाल विद्रोह दबाने के लिए जाना मान भी लें, तो सिरदार कपूर सिंह द्वारा 'Encyclopaedia of Islam (Published in London)' के हवाले से प्रस्तुत यह तथ्य[54] ज्यादा उचित प्रतीत होता है कि औरंगजेब की हसन अब्दाल से वापसी मार्च, 1675 के अंत में हुई, न कि दिसंबर 1675 ई. में।

यह भी विचार करने योग्य बात है कि मुगल शासन में किसी भी अधिकारी को — चाहे वह कितने भी बड़े पद का मालिक क्यों न हो — यह अधिकार प्राप्त नहीं था कि वह बादशाह की अनुपस्थिति में किसी व्यक्ति को मृत्यु-दंड दे सके। कम से कम औरंग़ज़ेब जैसे चालाक और शासन के लिए अत्यधिक सनक रखने वाले शासक के दौर में तो इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

सबसे प्रमुख और निर्णायक तथ्य है- श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा, श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत संबंधी बचित्र नाटक में दी गई गवाही, जिसके अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपना शरीर रूपी वर्तन दिल्ली के

---

[52] *नानक प्रकाश पत्रिका*, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 127.

[53] वही, पृष्ठ 128-129.

[54] वही, पृष्ठ 129-130.

बादशाह के सिर पर तोड़ा ।[55] इस गवाही के बाद किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश नहीं रह जाती कि गुरु साहिब की शहादत के समय औरंगजेब दिल्ली में ही था, जिसके हुक्म से ही 'कीनो बडो कलू महि साका' वाली घटना घटी।

औरंगजेब द्वारा, गुरु जी को शहीद करने से पहले तीन विकल्प दिए गए और शाही काजी ने इनमें से एक विकल्प चुनने के लिए कहा:

शरहा मानि, कै अजमति दैन। किधों म्रितू अपनी करि लैन।
इन तीनहुं महिं लखहु जो नीकी। हीय के बीच करहु सु ठीकी ।[56]

गुरु साहिब जी ने इस्लाम स्वीकार करने और करामात दिखाने के स्थान पर शहादत वाला तीसरा विकल्प चुना। औरंगज़ेब के आदेश और क़ाज़ी अब्दुल वहाब अली वोहरा के फ़तवे के अनुसार, समाना निवासी जल्लाद जलाल-उद-दीन द्वारा दिल्ली के चांदनी चौक में गुरु जी का शीश धड़ से अलग कर उनको शहीद किया गया। गुरु कीयां साखीयां[57] और भट्ट वही तलाऊंडा[58] के अनुसार, उनकी शहादत मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 5, संवत् 1732 विक्रमी (11 नवंबर, 1675 ई.) दिन गुरुवार को हुई। जिस बरगद के वृक्ष के नीचे गुरु जी की शहादत हुई, उस स्थान की पहचान मार्च 1783 ई. में सरदार बघेल सिंह करोड़सिंघिया ने दिल्ली जीतने के बाद एक

---

[55] ठीकर फोरि दिलीस सिरि प्रभ पुरि कीया पयान। -शब्दार्थ दसम ग्रंथ साहिब, पोथी पहली, भाई रणधीर सिंह (संपादक), पृष्ठ 70.

[56] श्री गुरु प्रताप ग्रंथ सटीक, रास 12, अध्याय 64, पृष्ठ 793.

[57] *गुरु कीयां साखीयां*, पृष्ठ 82.

[58] *भट्ट वही तलाउंडा, परगना जींद* उद्धृत: *नानक प्रकाश पत्रिका*, जून–दिसंबर 1975, पृष्ठ 84

वृद्ध मुस्लिम माशकी (पानी भरने वाली) महिला से करवाई, जिसके पिता ने शहादत के बाद उस स्थान को पानी से साफ़ किया था। उस स्थान पर बनी मस्जिद के साथ दीवार बनवा कर सरदार बघेल सिंह ने गुरुद्वारा सीस गंज साहिब का निर्माण करवाया।[59]

शहादत के बाद भाई जैता जी (बाबा जीवन सिंह जी) गुरु जी का पावन शीश, मुग़ल हुकूमत की नज़रों से बचाकर दिल्ली से आनंदपुर साहिब ले गए। भट्ट वही मुल्तानी सिंधी के अनुसार[60], भाई जैता जी के साथ दिल्ली से आनंदपुर साहिब शीश लेकर जाने वालों में भाई नानू जी और भाई ऊदा जी भी शामिल थे। बागपत, बड़ खालसा*, तरावड़ी, अंबाला और नाभा साहिब नामक विभिन्न स्थानों पर पड़ाव करते हुए भाई जैता जी और उनके गुरसिक्ख साथी मार्गशीष मास, शुक्ल पक्ष 10, संवत् 1732 विक्रमी (16 नवंबर, 1675 ई.) को कीरतपुर साहिब पहुँचे। इस स्थान पर गुरुद्वारा बिबानगढ़ साहिब स्थित है। कीरतपुर साहिब से गुरु जी के पावन शीश को सम्मानपूर्वक नगर कीर्तन के रूप में आनंदपुर साहिब लाकर, श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा सम्मान के साथ संस्कार किया जहां गुरुद्वारा सीस गंज साहिब (आनंदपुर साहिब) स्थित है। भाई जैता जी की वीरता देखकर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने उन्हें 'रंघरेटे गुरु के बेटे' कह कर सम्मान प्रदान किया।

---

[59] Bhagat singh, *History of Sikh Misals,* Publication bureau, Punjabi University, Patiala, 2009, P. 279.

[60] 'भट्ट वही मुलतानी सिंधी, खाता अणियों का' उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 84.

* स्थानक परंपरा के अनुसार।

भाई लखी शाह वणजारा नामक गुरसिक्ख ने मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 6, संवत् 1732 विक्रमी (12 नवंबर, 1675 ई.) की रात को अपने पुत्रों नगाहीया, हेमा, हाड़ी और काहने के पुत्र धूमा की सहायता से गुरु जी के पावन धड़ को अपने घर लाकर संस्कार किया और हुकूमत को धोखा देने के लिए अपने घर को आग लगा दी ।[61] इस स्थान पर आज गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब मौजूद है।

श्री गुरु तेग बहादर जी की इस अद्वितीय शहादत के गहरे और दूरगामी ऐतिहासिक प्रभाव पड़े। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के अनुसार[62], इस महान शहादत के बाद समस्त जगत में हाहाकार मच गई और आध्यात्मिक लोक में श्री गुरु तेग बहादर जी की जय-जयकार होने लगी। इस शहादत ने सोई हुई जनता को एक जबरदस्त झटका दिया, जिसके बाद कई स्थानों से औरंगज़ेब की मुग़ल हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गए। डॉ. इंदु भूषण बनर्जी लिखते हैं कि गुरु जी की शहादत के बाद सारा पंजाब नफरत और बदले की भावना के साथ भड़क उठा ।[63] रतन सिंह भंगू के अनुसार उस दिन से दिल्ली की मुगल हुकूमत का प्रभाव घटना शुरू हो गया:

---

[61] गुरु कीयां साखीयां, पृष्ठ 85 और ‘भट्ट वही जादोवंशियों की, खाता कनावत बड़तियों का’ उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून–दिसंबर 1975, पृष्ठ 84.

[62] तेग बहादुर के चलत भयो जगत को सोक॥
है है है सभ जग भयो जै जै ज जै सुर लोकि ॥
-शब्दार्थ दसम ग्रंथ साहिब, पोथी पहिली, पृष्ठ 73.

[63] इंदुभूषण बनर्जी, खालसे दी उत्पति, भाग दूसरा, पृष्ठ 63.

तब ते घटी पातशाही दिल्ली। तब ते तुरक कला भई ढिल्ली।[64]

गुरु जी की शहादत के बाद औरंगज़ेब बेचैन हो गया और वह उस रात चैन से सो न सका।[65] उसके अपने ही अहलकारों ने उसका विरोध शुरू कर दिया। *'नवाब सैफ खां, जो पांच हजार का मनसबदार था और उसकी बेगम गुरु साहिब के अकीदतमंद थे। गुरु साहिब की शहादत पर इन्होंने 40 दिन शोक मनाया और मातमी लिबास पहना। दिल्ली में गुरु जी की कैद और फिर शहादत के समय चांदनी चौक की कोतवाली का दरोगा ख्वाजा अब्दुल्ला गुरु जी से इतना प्रभावित हुआ कि शहादत के बाद तुरंत नौकरी छोड़कर गुरु गोबिंद सिंह के पास आनंदपुर में हाजिर हुआ और उसके पुत्र तक गुरु जी के दरबार में रहे।'*[66] खालिसा नामा का लेखक बख़्त मल्ल लिखता है कि जब एक खुले ख्याल वाले दरवेश ने शहीद श्री गुरु तेग बहादर जी के पावन शरीर को देखा तो पुकारकर कहा- 'सुल्तान ने अच्छा नहीं किया। इस कारण एक ऐसा बगावत का तूफान ऊठेगा जो सारी दिल्ली को अपनी लपेट में ले लेगा और दिल्ली ऊजाड़ कर रख देगा।' (फ़करि आज़ादाना राह गुज़र बर नाअश गुरु उफ़्ताद व गुफ़्त कि सुलतान खुब न करद।)[67]

---

[64] श्री गुरु पंथ प्रकाश, जीत सिंह शीतल, डॉ. (संपादक), पृष्ठ 69.

[65] राति प्रबिरती चिंत अधीना। रूचि करि खाना खान न कीना।
जबि प्रयंक पर पहुँचयौ पापी। हित सुपतनि के निंद्रा बयापी।
-श्री गुरु प्रताप ग्रंथ, जिल्द ग्यारहवीं, राशि 12, अंशू 68, पृष्ठ 4482

[66] गुरु तेग बहादर स्मृति अंक, पृष्ठ 109.

[67] खालसा नामा, पृष्ठ 12, उद्धृत: इति जिनि करी, पृष्ठ 183

औरंगज़ेब का ख्याल था कि श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद संपूर्ण सिक्ख कौम बेसहारा होकर निराशा में डूब जाएगी, लेकिन हुआ इसके बिल्कुल ही विपरीत। इस शहादत का सिक्खों ने अपने ढंग से ऐसा प्रतिकर्म किया जिसकी औरंगज़ेब को बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। 'मआसिरी आलमगीरी' में इस प्रकार की तीन घटनाएँ प्राप्त होती हैं। पहली घटना[68] 24 जून, 1676 ई./22 रबी-उल-अव्वल को चांदनी चौक में औरंगज़ेब के घोड़े पर सवार होने के दौरान घटित हुई जब उसके ऊपर एक सिक्ख द्वारा डंडा फेंक कर मारा गया जो उसके रक्षकों की छतरी पर जाकर लगा। दूसरी घटना[69] 19 अक्तूबर, 1676 ई./21 शाबान की है जब औरंगज़ेब नमाज़ पढ़कर वापस आ रहा था, तो भीड़ में से किसी सिक्ख ने उस पर तलवार से वार किया जिससे उसके अंगरक्षक *मुक्करम ख़ान* की उंगली घायल हो गई। तीसरी घटना[70] 27 अक्तूबर, 1676 ई./29 रमज़ान की है जब औरंगज़ेब जुमे की नमाज़ पढ़ने के बाद जामा मस्जिद की सीढ़ियां उतरकर नाव में सवार होने लगा, तो एक सिक्ख ने उस पर दो ईंटें फेंक कर मारी। यद्यपि वह सिक्ख औरंगज़ेब के अंगरक्षकों द्वारा शहीद कर दिया गया, लेकिन

---

[68] *MAÂSIR-I-ÂLAMGIRI,* Sir Jadunath Sarkar (Translater), P.94-95

[69] वही, पृष्ठ 95

[70] वही, पृष्ठ 93

साहस और विरोध का प्रगटावा कर गया।

ये तीनों घटनाएँ दर्शाती हैं कि गुरु साहिब जी की शहादत के कारण सिक्खों में कितना प्रबल रोष व्याप्त था। प्रिं. सतिबीर सिंह ने[71] श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत की तुलना फ़ीनक्स नामक मिथक पक्षी से की है, जो अपने अंतिम समय में तिनके-फूस इकट्ठा करके स्वयं को उनकी आग में भस्म कर देता है। इसके बाद आग की राख से एक अंडा निकलता है, जिससे फ़ीनक्स जैसा ही पक्षी जन्म लेता है। ठीक उसी प्रकार, श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत में से उनके जैसा ही मजलूमों का रक्षक और निडर खालसा पैदा हुआ।

समस्त रूप में हम कह सकते हैं कि श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत, धार्मिक आजादी और मानवीय अधिकारोंके लिए दी गई एक अद्वितीय शहादत थी; धर्म के लिए की गई ऐसी एक बड़ी और अनूठी घटना जो 'ठीकर फोरि दिलीस सिरि' वाली ऐतिहासिक घटना बन गई। गुरु तेग बहादर जी की शहादत इस पहलू से भी महत्वपूर्ण है कि वे न तो तिलक-जनेऊ धारण करते थे और न ही इसमें उनका **विश्वास** था, फिर भी उन्होंने धार्मिक अन्याय और अत्याचार को चुनौती देते हुए इन चिन्हों के धार्मिक

---

[71] प्रिं. सतिबीर सिंह, इति जिनि करी, पृष्ठ 186

विश्वास के लिए शहादत प्राप्त की। यह शहादत गुरु साहिब की परोपकारी भावना और समदृष्टि वाली अवस्था को प्रत्यक्ष करती है । इस अद्वितीय शहादत से प्रेरणा लेकर गुरु गोबिंद सिंह जी ने ऐसा खालसा सजाया, जिसने काबुल-कंधार तक खालसाई निशान लहराकर 'सभे साझीवाल सदाइनि' वाले सुनहरे युग का आगाज करने वाला लोकपक्षी राज्य स्थापित किया।

*****

श्री गुरु तेग बहादर जी को समर्पित काव्यात्मक वंदना

नवम नानक गुरु तेग बहादर, दीनानाथ गुर परम कृपाला।

त्याग वैराग की मूर्ति श्री गुर, प्रभ सिमरन को बडो विशाला।

जननी नाम श्री माता नानकी, श्री हरिगोबिंद पिता गुर होयो।

दुष्ट-दोखीयन भन्नै शस्त्रन संग, दल भंजन जिह गुर को पद होयो।

सन्न सोलह सै इक्की होयो, वैशाख भयो तब मास।

अप्रैल मास ईस्वी को जानऊ, जब प्रगट भए गुणतास।

अनेक वर्ष जब ग्राम बकाले महि, प्रभ सिमरन कियो गुरुदेव।

महल गुरु को माता गुजरी जी, तब कीनी गुरु की सेव।

अष्टम गुरु श्री हरिकृष्ण जी, दिल्ली महि जोति जोत समाए।

'बाबा वसै ग्राम बकाले', श्री गुर मुख से तब फरमाए।

मक्खण शाह की अरदास सिक्ख कै, गुरु भये श्री तेग बहादर।

मालवा बांगर पूर्व देश महि, प्रचार कीयो गुर सृष्टि की चादर।

औरंगजेब के जुल्मी राज में गुर, लोगन सिऊं कीयो बखान।

"भै काहू को देत नहि नहि भै मानत आन।"

हिंदू धर्म बचावन को, तिलक जनेऊ लावन पावन को,

कश्मीरी ब्राह्मण अति भावन सिऊं, कृपानिधि पास बेनंती कीनी।

शरण आए की लाज, पति हिंदू धर्म की आज,

श्री सतिगुरु गरीब निवाज, निज शीश दे कै रख्ख लीनी।

आपन शीश दे कै सतिगुर, सभ हिंदुअन को शीश बचायो।

आपन खून दे कै सतिगुर, दीया सभ मंदिर महि रुशनायो।

है है है भयो जग अंदर, जय जय जय सुर लोक करायो।

"कीनो बडो कलु महि साका" श्री गुरु गोबिंद सिंह फरमायो।

ऐसो परोपकारी परम पुरख गुरु, जिह धर्म ढाकन को चादर भयो।

संदीप सिंह तिह श्री चरणन में, बार बार बंदना कीयो।

-डॉ. संदीप सिंह

*****

हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी, श्री गुरु तेग बहादर जी और महान गुरसिक्खों- भाई मती दास जी, भाई सती दास जी और भाई दयाला जी के 350वें शहीदी दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर उनकी महान शहादत को कोटि-कोटि प्रणाम करती है। गुरु पातशाह के चरणों में अरदास है कि वे हम सभी को विषय-विकारों से मुक्त करके अकाल पुरख का नाम स्मरण करने की बख्शिश प्रदान करें।

दीवारें दिल्ली की बोलकर कहने लगी,
दुखों का बोझ धरती थी सहने लगी ।
जब आंसुओं की बरसात हुई कश्मीर में,
सब खामोश हो गए आखिर में ।
जब कोई ना आया गले लगाने को,
मंदिर तिलक जनेऊ बचाने को ।
जब तेग बहादर सतगुर के, चरणों में फरियाद हुई,
फिर पावन रक्त की धारा से, धरती ये आबाद हुई ।
पा गए शहादत सतगुरु जी, सृष्टि सगली बचाने को,
धर्म की हस्ती बचाने को, रोते हुए चेहरे हंसाने को ।
सतगुरु की शहादत से, चौक चांदनी मशहूर हुआ ।
"दनौली" सच के प्रकाश से, अंधेरा जुल्म का दूर हुआ ।

-गुरमीत सिंह दनौली

HARYANA SIKH GURDWARA MANAGEMENT COMMITTEE
ਹਰਿਆਣਾ ਸਿੱਖ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ